आलू की फसल के प्रमुख रोग एंव कीट और उनका नियन्त्रण

तारकेश्वर, अविनाश चौधरी, गिरिजेश कन्नौजिया व अभिनव सिंह
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या 224 229
Email Id: tarkeshwar.barhaj2014@gmail.com

किसान भाइयों! रबी का मौसम चल रहा है। आपने अपने खेतों में आलू उगाया होगा। भारत में उगायी जाने वाली सब्जियों में आलू का प्रथम स्थान है। जो कि गेहूं, मक्का व धान के बाद चौथी मुख्य फसल है। आलू यहां के दैनिक आहार में शामिल है। यह नगदी फसल है जिसे सीधे बाजार में बेचकर मुल्य कमाया जा सकता है। अतः किसान भाई आलू की फसल में अपनायी जाने वाली विभिन्न सस्य क्रियाओं को करके अधिक उत्पादन के साथ– साथ गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं। जैसे आलू के खेत, मेंड़ी अथवा नाली में जो भी खरपतवार उग आये हैं उनको खुरपी, कुदाल, फावड़ा और हाथ से निकाल दें अन्यथा फसलों में दिये गये पोषक तत्व इन खरपतवारों द्वारा ग्रहण कर लिए जायेंगे जिससे फसल की उत्पादन कम हो सकती है। इसके अलावा मेंड़ी चढ़ाने के बाद जो आलू बाहर दिखाई पड़ रहे हों उनको मिट्टी से ढ़क दें नहीं तो उनका रंग सूर्य के प्रकाष के कारण हरा हो जायेगा। जो खाने में कसैला लगता है। अतः आलू का मूल्य कम हो जाता है।

प्रमुख रोग एंव उनका निदान

आलू के कुछ प्रमुख रोग जैसे अगेती झुलसा, पछैती झुलसा, सामान्य धब्बा, काली रूसी, पत्ती मुडान, चित्तीरोग, फोमा आदि इसी समय लगते हैं जिसके कारण आलू का उत्पादन बहुत ही घट जाता है। अतः इनका रोग थाम करना बहुत ही जरूरी हो जाता है।

अगेती झुलसा रोगः

वायुमंडल में गर्म व नम वातावरण होने पर आलू में अगेती झुलसा का प्रकोप होता है।

लक्षणः

यह रोग आलू की पत्तियों, कन्दों, डण्ठल आदि में लगता है। इसमें पुरानी पत्तियों के नीचे गोल अथवा अण्डाकार भूरे रंग के धब्बे बनने शुरू हो जाते हैं जो क्लोरोफिल के विकास को रोक देते हैं। इस तरह प्रकाश संश्लेषण के अभाव में कंदों का निर्माण ठीक से नहीं होता है जिससे उत्पादन पूर्ण रूप से घट जाता है।

नियंत्रणः

- रोगग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें।
- इसके नियन्त्रण के लिए भी मैनकोजेब पहले तत्पश्चात रिडोमिल/करजेट/सेक्टिन में से कोई भी दवा 2.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करते रहना चाहिए।

पछेती झुलसा रोगः

वायुमंडल में आर्द्रता जब 80 प्रतिशत से अधिक हो जाती है उस समय इस बिमारी का प्रकोप होता है।

लक्षणः

यह पत्ती, डंठल व कन्द सभी भागों मे लगता है। इसमें छोटे पीले धब्बे बन जाते हैं जो बाद में ये धब्बे

पत्तियों के बीच में अगूंठी नुमा सफेद फफूंद जैसी संरचना बना लेते हैं।

नियन्त्रणः

- रोगग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें।
- रोग लगने से पहले फफूंदनाशी मैंनकोजेब का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में पहला छिडकाव करें।
- 10 दिन बाद दूसरा छिडकाव रिडोमिल **MZ**/करजेट **M**/सैक्टिन 60 **WP** में से कोई भी 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।
- 10–15 दिन बाद तीसरा छिडकाव मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर करें।

पत्ती मुड़न रोगः

लक्षणः

इसमें पत्तियाँ चमड़े की तरह कड़ी होकर मुड़ जाती हैं, बाद में पीली पड़ जाती हैं।

नियन्त्रणः

- यह रोग दिखाई पडने पर कन्दों सहित आलू को उखाड कर नष्ट कर दें।
- आवश्यक सस्य क्रियायें अपनायें।

चित्तीदार रोगः

लक्षणः

इस रोग में पत्तियों पर अनियन्त्रित चित्तीदार पीले धब्बे बनते हैं। फलतः प्रकाश संश्लेषण के अभाव में कंदों का निर्माण ठीक से नहीं होता है।

नियन्त्रणः

- इसमें भी रोगग्राही पौधौं को कन्द सहित उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- इसके नियन्त्रण के लिए आलू बोने से पहले 3.0 प्रतिशत बोरिक एसिड या 3.0 प्रतिशत ट्राई सोडियम फास्फेट 10 से 15 मिनट भिगोकर उसके बाद छाया में सुखाकर बोना चाहिए।

सामान्य धब्बा, काली रूसी, फोमाः

- आवश्यक सस्य क्रियायें अपनायें।
- रोगग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें।
- विशेषज्ञों से सलाह लें।

प्रमुख कीट व उनका नियन्त्रण

माहूँ या चेपा कीटः

यह आलू का प्रमुख कीट है जो आलू के पत्तियों का रस चूसकर पौधों को नष्ट कर देता है।

नियन्त्रणः

- मिथाइलडेमिटान 25 EC/ डाइमिथेएट 25 EC का 0.03 प्रतिशत का घोल 10 से 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।

ट्यूबर मॉथः

यह आलू के प्रमुख कीटों में से एक है। इस कीट के लारवा कन्दों में सूराख बना देते हैं। ये आलू के कन्दों का रस चूसते हैं जिससे फल सड़ने लगते हैं।

नियन्त्रणः

- इसके नियन्त्रण के लिए 5 प्रतिशत एन.एस.के.ई. या क्यूनॉलफास 25 ई.सी. का 2 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

अन्य प्रमुख सस्य क्रियायेंः

- खेत में सिंचाई करके नमी बनाए रखें।
- खेत के चारों तरफ धुआँ करके तापमान सामान्य रखें जिससे फसल को पाला से रोका जा सके।

- आलू खुदाई से एक हफ्ता पहले सिंचाई बन्द कर दें एंव ऊपरी डंठल को काट दें।
- आलू खुदाई के बाद तापमान 30 डिग्री सेन्टीग्रेट से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

आवारा पशुओं से कैसे बचाएँ:

- फिनाइल का प्रयोग खेत के चारों तरफ करें।
- सड़े अण्डे का प्रयोग खेत के चारों तरफ करें।
- सड़ा मठ्ठा + 500 ग्राम लहसुन के घोल का छिड़काव खेत के चारों तरफ करें।
- नीम + धतूरा के मिश्रण का छिडकाव करें।
- कंटीले तार का प्रयोग खेत के चारों तरफ करें।
- लैम्प/लालटेन खेत में जला दें।
- खेत में कपड़े व लकडी से आदमी का स्वरूप बनाकर लगा दें।